रिकॉर्ड :– तुम्हें पाके..... ओम् शान्ति प्रातः क्लास 24/11/1966

..... कौन सुनते हैं? बच्चे सुनते हैं। वो ही अर्थ को समझते हैं। प्रजा भी जो सुनती है वो भी तो विश्व ..... बनती है ना। जैसे भारतवासी कहते हैं कि हमारा भारत वैसे वहाँ भी यथा राजा–रानी तथा प्रजा ..... हम विश्व के मालिक हैं। जैसे यूरोपवासी आए तो वो भी कहते थे हिन्दुस्तान के मालिक हैं। ..... हिन्दुस्तानी कोई ऐसे नहीं कहेंगे कि हम हिन्दुस्तान के मालिक हैं। वो तो गुलाम थे। राजाई ..... थी। क्रिश्चियन लोग कहते थे भारत हमारा है। भारत पर हमारा राज्य है। अभी तुम मीठे .... के मालिक थे। फिर हमारा राज्यभाग रावण ने छीन लिया है। अब रावण का राज्य है। ..... यह पराया राज्य है। गाया भी जाता है दूर देश का रहने वाला आया देश पराये... ..... राज्य ले रहे हो। तुम कोई के लिए लड़ते नहीं हो। अपने लिए ही तुम सब कुछ करते हो। ..... हैं अपने प्रेसिडेंट के लिए वा प्राइममिनिस्टर के लिए। बड़े आदमी तो वो बनते हैं। इनका न ..... अच्छी रीति है। फिर भी अभी कहते हैं ना भारत हमारा है; परन्तु भारतवासियों को यह पता नहीं है कि यह कोई हमारा राज्य नहीं है। यह रावण राज्य है जिसमें हम रहे हुए हैं। राम राज्य में ऐसे नहीं कहेंगे कि अपना है, यह पराया है। अभी भारत पर रावण का पूरा राज्य है। राम का राज्य था, देवताओं का राज्य था। ..... नहीं है। अब तुम बच्चे जानते हो हम फिर 5000 वर्ष बाद अपना राज्य ले रहे हैं। किससे? बाप से। राम अक्षर कहने से मनुष्य मूँझते हैं। इसलिए यह कहने नहीं हैं। बेहद के बाप से बाबा अक्षर बड़ा मीठा है। बाबा अक्षर वर्सा याद दिलाता है। एक बाप के सिवाय सबको भूल जाना है। हम आत्मा से बाबा से अपना वर्सा ले रहे हैं। बाप आकर आत्मा अभिमानी बनाते हैं। हम आत्मा हैं। आत्मा कितनी छोटी महीन है। इसमें सारा पार्ट भरा हुआ है। यह बातें मोटी बुद्धि वाले समझाए ना सके। बाप से हम वर्सा ले रहे हैं। है बहुत सहज बात; परन्तु माया ऐसी है जो कि भुलाय देती है। इसलिए तुम बच्चों को मेहनत करनी पड़ती है। इसमें कोई बाखत(बखेड़ा) आदि की बात नहीं है। ना ही कोई ड्रिल आदि सीखनी होती है। यह तो बाप से वर्सा पाना है। इसमें कुछ भी करने की दरकार नहीं है। कोई शास्त्र आदि भी लाने की दरकार नहीं है। सिर्फ बाप जो सुनाते हैं वो धारणा करनी है। बाबा से हम अपना राज्य भाग लेते हैं। अभी जाना है अपने घर। जैसे नाटक के एक्टर्स पार्ट बजाए फिर कपड़े बदली कर अपने घर चले जाते हैं। अब तुमको तो नंगे जाना है। बुद्धि में यह हो कि अब नाटक पूरा होता है। हम हर 5000 वर्ष बाद पार्ट बजाते हैं। आधा कल्प राज्य करते हैं, फिर आधा कल्प गुलाम बन जाते हैं। अभी प्रकृति के दास बन गए हैं ना। बच्चों को कोई जास्ती तकलीफ नहीं देते हैं। बुद्धि में सिर्फ यह याद रहना चाहिए। पुरुषार्थ करके जितना हो सके यह भूलना ना चाहिए। अभी नाटक पूरा होता है। बाकी थोड़ा समय है। हमको जाना है। ऐसे–2 अपने साथ बातें करनी होती हैं। पावन बनकर वापस जाना है। हर एक बच्चा समझ सकता है कि मैं बाप को कितना याद करता हूँ। भल कोई चार्ट लिखते नहीं हैं; परन्तु बुद्धि में तो रहता है ना। रात को चलाना चाहिए कि हमने सारे दिन में क्या किया। जैसे रात को सम्भालते हैं ना व्यापारी लोग। यह भी व्यापार है। रात को सोते समय जाँच करनी चाहिए सारे दिन में बाप को कितना याद किया। कितनों को बाप का परिचय दिया। जो होशियार होते हैं उनका धंधा अभी अच्छा चलता है। जो बुद्धू होंगे तो उनका धंधा भी वैसा ही चलेगा। यह तो है अपनी कमाई करना। बाप सिर्फ कहते हैं मुझे याद करो और चक्र को याद करो तो चक्रवर्ती राजा बनेंगे। कितनी सहज बात है। इसमें टूमच कोई आशाएँ भी ना हो(नी) चाहिए। गरीब जो गाँवों में रहने वाले होते हैं उन्हों को आशाएँ कम रहती हैं। साहुकारों को आशाएँ बहुत रहती हैं। गरीब तो शहर में आए इतने फैशन आदि देखते ही नहीं हैं, जो आशाएँ वृद्धि को पाएँ। वो अपनी गरीबी में ही सुखी रहते हैं। अपने रोटले खाने पर ही हिल जाते हैं। समझते हैं कि हमको तो बहुत खाना है। थोड़ा अच्छे शहर में रहेंगे तो देखेंगे तो फिर आशा होगी यह लेवें। बाहर वालों में तम्मना कम रहती है। साहुकारों में तो ढेर तम्मनाएँ रहती हैं। यह भी चाहिए, यह भी चाहिए। मित्र–संबंधियों आदि को ही तंग कर देंगे। गरीब अपनी अपने में ही खुश रहते हैं। बाबा अनुभवी तो है ना। तो ऐसे–2 गरीबों पर भी रहम खाना चाहिए। गरीब देखेंगे इतने बड़े–2 आदमी भी यह ज्ञान सुनते हैं तो हम भी सुनेंगे। चित्र तो बाबा बहुत बनवाते रहते हैं। कोई कहते हैं– बाबा, हमको सर्विस

..... है। बेहद का बाप आकर बेहद का वर्सा भारत ...ते हैं। जन्म भी उनकी यहाँ ही गाया जाता है। वह इस ड्रामा में अनादि की नूँध है। जैसे बाप ऊँच ते ऊँच है वैसे ही भारत खण्ड भी ऊँच ते ऊँच है। अब बाप आकर सारी दुनिया की सद्गति करते हैं। तो सबसे बड़ा तीर्थ भारत हुआ ना। कहते हैं– हे गॉड फादर, हमको अपने साथ घर ले चलो। भारत के ऊपर सबका ही लव है। बाप भी भारत में ही आते हैं। अब तुम मेहनत कर रही हो। गोपीवल्लभ की गोप–गोपियाँ तुम हो। सतयुग में गोप–गोपियों की बात नहीं है। वहाँ तो कायदे अनुसार राजाई चलती है। चरित्र कृष्ण के हैं नहीं। चरित्र सिर्फ एक बाप के हैं। यह उनका चरित्र कितना बड़ा है। सारी पतित दुनिया को पावन बनाते हैं। यह कितनी चतुराई है। इस समय सब मनुष्य मात्र अजामिल जैसे हैं। सरकार समझती है यह साधु आदि भ्रष्टाचारी से श्रेष्टाचारी बनावेंगे। बाप कहते हैं इन्हों का भी उद्धार मुझे करना है। जैसे तुम एक्टर्स हो वैसे ही बाप भी एक्टर है। तुम 84 जन्मों का चक्र लगाते हो ना! वो भी क्रियेटर–डायरैक्टर और मुख्य एक्टर है। करन–करावनहार है। क्या करते हैं? पतितों को पावन बनाते हैं। बाप कहते हैं, मुझे तुम बुलाते हो आकर हमें पावन बनाओ। मैं भी इस पार्ट में बाँधा हुआ हूँ। ऐसे कोई कह ना सके, यह क्यों बना, कब बना? यह तो अनादि बना–बनाया ड्रामा है। इनका आदि–मध्य–अंत है। प्रलय होती नहीं। आत्मा (अ)विनाशी है। कब विनाश नहीं हो सकती। इनको पार्ट भी अविनाशी मिला हुआ है। साढ़े 500 करोड़ आत्माओं का पार्ट है। यह बेहद का ड्रामा है ना। नटशेल में बाप बैठ समझाते हैं, यह ड्रामा का पार्ट कैसे चलता है। बाकी ऐसे नहीं, परमात्मा है तो मुर्दे को जिंदा कर देंगे। यह अंधश्रद्धा की बातें यहाँ नहीं हैं। मुझे तो पुकारते ही हैं कि पतित–पावन आओ। आकर हमको पतित से पावन बनाओ। सो तो बरोबर आते हैं ना। गीता है सर्वशास्त्रमई शिरोमणि। भगवान ने ही गीता सुनाई है। अच्छा, सहज राजयोग कब सिखाया? यह अब तुम जानते हो, बाबा आते ही हैं कल्प के संगमयुग पर, जब आकर पावन दुनिया, नई राजधानी स्थापन करते हैं। सतुयग में तो नहीं स्थापन करेंगे ना! वहाँ तो है ही पावन दुनिया। कल्प के संगमयुग पर ..... यह कुम्भ का मेला लगता है। वो कुम्भ का मेला 12 वर्ष बाद लगता है। यह बड़ा कुम्भ 5000 वर्ष बाद लगता है और यह 50 वर्ष चलता है। चलता ही रहता है। ऐसा कब सुना क्या जो 50 वर्ष मेला चले। यह है आत्माओं और परमात्मा का मेला जबकि परमपिता परमात्मा आकर आत्माओं को पावन बनाए ले जाते हैं। कल्प की आयु लम्बी करने से ही मनुष्य मूँझ गए हैं। तुम अब समझते हो। तुम्हारी मैगजीन जो निकलती है उनको भी तुम बच्चे समझ सकेंगे। और कोई नहीं समझ सकते। बाबा ने कहा था, लिख दो जो कुछ हुआ, 5000 वर्ष पहले मिसल। नथिंग न्यू। 5000 वर्ष पहले हुआ था जो अब रिपीट होता है। किसको भी यह समझना हो तो आकर समझें। ऐसी–2 युक्तियाँ रचनी चाहिए। हम अख़बार में क्या डालें। यह भी तुम लिख सकते हो यह महाभारत लड़ाई कैसे पावन दुनिया का गेट खोलती है, आकर समझो। कल्प पहले मिसल इस महाभारत लड़ाई से सतयुग की स्थापना कैसे होती है, आकर समझो। 10 वर्ष में देवी–देवताओं की राजधानी स्थापन हो जावेगी। गॉड फादर से वर्थ राइट लेना हो तो आकर लो। ऐसे–2 अंदर विचार–सागर–मंथन करना चाहिए। वो लोग स्टोरी आदि बनाते हैं। वो भी उन्हों की ड्रामा में नूँध है जो पार्ट बजाते रहते हैं। व्यास ने भी ड्रामाप्लैन अनुसार यह शास्त्र आदि बनाए हैं। पार्ट ही ऐसा मिला हुआ है। अब तुम ड्रामा को समझ गए हो। फिर वो ही ड्रामा रिपीट होगा। अब तुम आए फिर से ज्ञान सुनते हो सो देवी–देवता बनने। तुम जानते हो फिर से यह लक्ष्मी–नारायण का राज्य होगा। बाकी सब धर्म वाले खलास हो जावेंगे। यह सिर्फ तुम ही जानते हो, क्या–2 पार्ट हुआ, फिर क्या–2 होगा। सतयुग में सूर्यवंशी राजधानी होगी, फिर चंद्रवंशी होगी। उस समय और कोई राजधानी थी नहीं। सूर्यवंशी थे तो चंद्रवंशी नहीं थे। फिर इस्लामी धर्म हुआ, बौद्धी ना थे। यह सब बाद में वृद्धि होती जाती है। यह बातें तुम बच्चों के सिवाय किसकी बुद्धि में नहीं है। पैराडाइज़ लक्ष्मी–नारायण की राजधानी को ही कहा जाता है। रामराज्य को भी नहीं। सतयुग में 16 कला सम्पूर्ण है। फिर कला कम होती जाती है। अब तुम ..... नॉलेजफुल बन गए हो। बाबा तुमको आप समान

नॉलेजफुल, पीसफुल बनाते हैं। तुम जानते हो आधा कल्प हम पीसफुल रहेंगे। कोई प्रकार की अशांति न रहेगी। वहाँ बच्चे कब रोते भी नहीं। सदैव मुस्कराते रहेंगे। यहाँ भी तुमको रोना नहीं है। गायन भी है अम्मा मरे तो भी... जिन रोया तिन खोया। पद भी भ्रष्ट हो जावेगा। तुमको पतियों का पति मिला है, जो स्वर्ग की बादशाही देते हैं। वो पति आदि तो गटर में डालते हैं। यह आकर निकालते हैं। तो कौन बड़ा? वो तो कब मरता भी नहीं। फिर रोने की क्या दरकार है। जो रोने (प्रूफ) बनते हैं वो ही बादशाही लेते हैं। बाकी तो प्रजा में चले जावेंगे। बाबा से अगर कोई पूछे इस हालत में हम क्या बनेंगे तो बाबा (ब)ता देंगे। बच्चों को पिछाड़ी में सब सा० होता रहेगा। जैसे स्कूल में भी मालूम पड़ जाता है ना। पिछाड़ी में तुमको सब पता पड़ जावेगा, रुद्रमाला कौन–सी बनती है। स्कूल में भी पिछाड़ी में जब इम्तिहान के दिन होते हैं तो बहुत पुरुषार्थ करते हैं। समझते हैं, फलानी सब्जेक्ट में शायद हम नापास होंगे। तुमको भी मालूम पड़ जावेगा। बहुत कहते हैं, हमारा बच्चों में मोह है। वो तो निकालना ही होगा। मोह रखना है एक में। बाकी तो ट्रस्टी होकर संभालना है। कहते भी हैं ना यह सब कुछ बाप ने दिया है तो फिर ट्रस्टी होकर चलो। ममत्व निकाल दो। बाप खुद आए कहते हैं इनसे ममत्व निकाल दो। समझो, यह सब उनका है। उनकी मत पर चलो। उनके कार्य में ही लग जाओ। मनुष्य तो जो करते वो पाप ही करते। कन्या दान करते हैं वो भी पाप ही करते। यहाँ तो कन्या दान की बात नहीं। यहाँ तो तुम अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान देती है। यहाँ तो कन्याओं के लिए बाप के पास सबसे जास्ती रिगार्ड है। कन्या कर्मबंधन से फ्री रहती है। बच्चे को तो बाप के वर्से का नशा रहता है। कन्या वर्सा नहीं पाती। यहाँ इस बाप के पास मेल–फिमेल का भेद नहीं। बाप आत्माओं को समझाते हैं। तुम भी जानते हो हम सब ब्रदर्स हैं। बाप से वर्सा ले रहे हैं। आत्मा पढ़ती है। बाप आकर सब बातें समझाते हैं। शिवबाबा है निराकार। उनकी पूजा भी करते हैं। सोमनाथ का मंदिर भी शिव का ही है। सोमरस पिलाया था उनकी निशानी है। शिवबाबा की कितनी इज्ज़त रखी है। कितना सो..... का मंदिर बनाया है। यह अब तुम जानते हो शिव ने आकर क्या किया, क्यों उनका यादगार मंदिर बनाया है। यह भी तुम समझते हो कल्प–2 ऐसा ही होगा। ड्रामा में नूँध है। सो रिपीट हो रहा है। बाप को आना ही है। पुरानी दुनिया का विनाश होना है। कोई अफसोस की बात नहीं। यह जो खूनीनाहक खेल है, नाहक सबका खून होगा। नहीं तो कोई किसका खून करे तो उनको फाँसी की सज़ा मिल जाए। अब किसको पकड़े? यह तो नैचरल कैलेमिटीज़ आनी ही है। विनाश तो होना ही है। अमरलोक मृत्युलोक के अर्थ को भी कोई नहीं जानते। तुम जानते हो, आज हम मृत्युलोक में हैं, कल हम अमरलोक में होंगे। इसलिए हम पढ़ते हैं। मनुष्य तो घोर–अंधियारे में हैं। तुम ज्ञान अमृत पिलाते हो। हाँ–2 कर फिर सो जाते हैं नींद में। सुनते भी हैं बेहद का बाप वर्सा दे रहे हैं। यह वो ही महाभारत लड़ाई है जिससे स्वर्ग के गेट्स खुलते हैं। लिखते भी हैं ज्ञान बहुत अच्छा है। यह ज्ञान कोई नहीं दे सकते। मानते हैं। खुद कुछ भी ज्ञान उठाते नहीं। फिर सो जाते। इसको कहा जाता है कुम्भकर्ण। तुम कह सकते हो, लिखकर देते हो, ऐसे नहीं कि घर जाकर सो जाओ। कुम्भकर्ण के चित्र के आगे ले जाना चाहिए। इस मुआफिक सो ना जाना। समझाने की भी अक्ल चाहिए ना। बाबा ने कल भी समझाया अपने दुकानों में यह मुख्य–2 चित्र रखो जो कोई आवे तो इस पर समझाओ। वो भी सौदा करो, यह भी सौदा कराओ। यह है सच्चा सौदा। इससे तुम बहुतों का कल्याण कर सकते हो। इसमें लज्जा की कोई बात नहीं। कोई कहे, ब्रह्माकुमार बने हो? बोलो– अरे, प्रजापिता ब्रह्मा का कुमार तो तुम भी हो ना। बाप नई सृष्टि रच रहे हैं। पुरानी को आग लग रही है। तुम भी जब तक ब्रह्माकुमार ना बनो, स्वर्ग के सुख ना देख सकोगे। ऐसे–2 तुम दुकान में यह भी सर्विस करो तो कितनी बेहद की सर्विस हो जावेगी। आपस में राय करो, दुकान छोटा है तो दीवार में लगा सकते हो। चैरिटी बिगन्स एट होम। पहले–2 उनका कल्याण करना है। बोलो, बाप कहते हैं अब और कोई भी देहधारी को याद ना करो। एक बाबा .....। ओम।